Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, APRIL-MAY, 2021, VOL-9/45

महामारी का भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले दीर्घकालीन प्रभाव का अध्ययन

अर्चना शर्मा, Ph. D.

पद – प्राध्यापक, शास. महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इन्दौर

E-mail : archsharma0123@gmail.com

Paper Received On: 25 MAY 2021
Peer Reviewed On: 30 MAY 2021
Published On: 1 JUNE 2021

Abstract

2019 में भारत विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था थी लेकिन कोरोना महामारी के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था सर्वाधिक प्रभावित हुई और वह विश्व की पांचवी अर्थव्यवस्था से नीचे गिरकर छठे स्थान पर आ गई। 2020 में आर्थिक वृद्धि के ऋणात्मक होने का प्रभाव सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर पड़ा। बेरोजगारी की दर में वृद्धि हुई, आयात–निर्यात में कमी आई, औद्योगिक नगरों से श्रमिकों का पलायन गांव की ओर हुआ इससे औद्योगिक क्षेत्र, निर्माण क्षेत्र, पर्यटन व सूचना प्रौद्योगिक आदि लगभग सभी क्षेत्र प्रभावित हुए। विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्था में भले ही भारत शामिल है लेकिन प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद की दृष्टि से भारत की स्थिति अत्यंत दयनीय है। 2020 में भारत की विकास दर–10.3% रहने का प्रभाव अर्थव्यवस्था पर दीर्घकालीन रूप से पड़ा है। एक वर्ष की विकास दर ऋणात्मक होने से देश लगभग पौने दो वर्ष विकास की दृष्टि से पीछे चला गया है।

प्राचीनकाल में भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी। 1700 सदी में भारत की अर्थव्यवस्था की भागीदारी विश्व की अर्थव्यवस्था में 24.4% थी, जो पूरे विश्व में सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी। इसलिए भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। लेकिन इसके पश्चात ईस्ट इंडिया कंपनी के आने के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था का लगातार पतन होने लगा। जब भारत स्वतंत्र हुआ उस समय अर्थव्यवस्था का पूर्ण पतन हो चुका था, और विश्व अर्थव्यवस्था में भारत का हिस्सा घटकर 3.8% रह गया। भारतीय अर्थव्यवस्था के पुनरूद्धार के प्रयास लगातार किए गए लेकिन इसका कुछ खास प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था पर नहीं दिखाई दिया और 1973 में भारतीय अर्थव्यवस्था का विश्व अर्थव्यवस्था में हिस्सा और घटकर 3.1% हो गया। 1991 में उदारीकरण की शुरूआत होने से भारतीय अर्थव्यवस्था ने विकास के एक नए दौर में प्रवेश किया। 2010 में भारतीय अर्थव्यवस्था का विश्व की अर्थव्यवस्था में हिस्सा 6.3% हो गया। 2014 में विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था क्रयशक्ति समता के आधार पर विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। 2005–06 से लगातार तीन वित्तीय वर्षों तक भारत की विकास दर 9% से भी अधिक रही। 2004–05 से 2011–12 की अवधि में भारत की औसत विकास दर 8.3% रही, लेकिन इसके पश्चात वैश्विक मंदी से प्रभावित होने से 2012–13 व 2013–14 में विकास दर घटकर 4.6% औसत पर पहुंच गई। इसके पश्चात विकास दर ने रफ्तार पकड़ी, लेकिन 2018–19 में पुनः विकास दर घट कर 4.2% पर आ गई। यद्यपि सरकार के द्वारा विकास दर में वृद्धि लाने के अनेक प्रयास किए गए लेकिन कोरोना महामारी ने भारत की अर्थव्यवस्था को बहुत ज्यादा प्रभावित किया। लगातार लॉकडाउन के कारण भारत की विकास दर ऋणात्मक हो गई।

भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार 2020–21 के प्रथम क्वार्टर में भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर में 23.9% की कमी, द्वितीय क्वार्टर में 7.5% की कमी, तृतीय क्वार्टर में 0.1% की वृद्धि व चतुर्थ क्वार्टर में 0.7% की वृद्धि की संभावना बताई गई। भारतीय रिजर्व बैंक ने भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रारंभिक दौर पर -9.5% सकल राष्ट्रीय उत्पाद में कमी बताई, जिसे बाद में -7.3% संशोधित किया गया।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

भारत की अर्थव्यवस्था, जो एक तीव्र विकास वाली अर्थव्यवस्था रही है, लेकिन कोरोनाकाल में इसकी विकास दर ऋणात्मक हो गई। विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में भारत की अर्थव्यवस्था सर्वाधिक प्रभावित हुई है। कोरोनाकाल में लगातार लॉकडाउन की वजह से न केवल विकास दर ऋणात्मक हुई, बल्कि लोगों के रोजगार में भी गिरावट आई। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष के अनुसार 2020–21 में भारत की विकास दर -10.3% का अनुमान व्यक्त किया गया। यद्यपि लॉकडाउन समाप्त होने के पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था धीरे–धीरे सुधार की ओर बढ़ रही है और यह संभावना अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष व अन्य विश्लेषकों द्वारा व्यक्त की जा रही है, कि भारतीय अर्थव्यवस्था संभावित दर से भी ज्यादा दर से वापसी कर रही है, और शीघ्र ही यह विश्व की सर्वाधिक विकास दर वाली अर्थव्यवस्था बन जावेगी। अगले पांच वर्षों में इसकी विकास दर 7% से 8% के बीच रहने का पूर्वानुमान व्यक्त किया गया है। कोरोनाकाल के पूर्व जहाँ विकास दर 2019–20 में 4.2% थी, जो 2021–22 में बढ़कर 8.8% होने की संभावना व्यक्त की जा रही है।

इस शोध पत्र में भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोरोना के दीर्धकालीन प्रभाव का अध्ययन किया गया है। कोरोनाकाल के पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था के तीव्र गति से विकास होने से क्या उस हानि की भरपाई हो सकेगी? जो 2020–21 में भारतीय अर्थव्यवस्था को नुकसान हुआ या इसके दीर्धगामी परिणाम होगें। इस नुकसान की भरपाई में कितना समय लगेगा? भारत 2025 में 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन पायेगा या नहीं। इसका अध्ययन इस शोध पत्र में किया गया है ।

शोध का उद्देश्य

इस शोध पत्र में निम्न उद्देश्यों के आधार पर कार्य किया गया है –

(i) विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की सकल घरेलू उत्पाद दर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(ii) विश्व की सकल उत्पाद में भारतीय अर्थव्यवस्था के स्थान का अध्ययन करना।

(iii) भारत की प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का विश्व की 6 बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन करना।

(iv) आर्थिक विकास दर का विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन करना।

(v) कोरोना महामारी के पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले दीर्धकालीन प्रभाव का अध्ययन करना।

(vi) विभिन्न वर्षों में बेरोजगारी की दर का अध्ययन करना।

(vii) विभिन्न वर्षों में मुद्रा की स्फीति की दर का अध्ययन करना।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

शोध विधि

इस शोध पत्र में द्वितीयक समंकों का प्रयोग किया गया है। समंकों के विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय माध्य का प्रयोग किया गया है। समंकों का विश्लेषण सारणीयन व रेखाचित्रों द्वारा किया गया है।

शोध समस्या

भारत एक तेजी से विकास करती हुई अर्थव्यवस्था है। सन् 2010 में भारत की सकल घरेलू उत्पाद (चालू मूल्य दर) के आधार पर 9वीं बड़ी अर्थव्यवस्था थी, जो 2015 में यूनाइटेड किंगडम, ब्राजील, फ्रांस व इटली को पीछे छोड़ते हुई 5वीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई। कोरोना काल ने भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व की 6 बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सर्वाधिक प्रभावित किया है।

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष के अनुसार 2019 में भारत विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था थी, लेकिन 2020 में यह कोरोना महामारी के कारण यह विश्व की छठी अर्थव्यवस्था हो गया है, और 2021 में इसके एक पायदान और पीछे की ओर जाकर विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में फ्रांस से भी पीछे जाकर सातवें स्थान पर रहने की संभावना बताई गई है। इसका विश्व की अर्थव्यवस्था में योगदान 2017 में 3.3% था, जो 2021 में इसके 3.1% होने की संभावना बताई गई है।

कोरोना महामारी के कारण भारत एक लंबे समय तक लॉकडाउन में रहा। देश में पूर्ण लॉकडाउन के 6 फेसेज रहे, जिनकी अवधि 25 मार्च से 31 मई 2020 तक रही। इसके पश्चात अनलॉक के फेसेज शुरू हुए जो 6 चरणों में रहे, जिनकी अवधि 1 जून 2020 से आरम्भ होकर 30 नवम्बर 2020 तक रहीं इसका भारतीय अर्थव्यवस्था पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप भारत की आर्थिक विकास दर ऋणात्मक हो गई। वित्तीय वर्ष की प्रथम तिमाही में विकास दर -23.9% कमी हो गई, व्यापार उद्योग, होटल इससे सर्वाधिक प्रभावित हुए।

उत्पादन कार्य की वृद्धि दर -39.3%, खनन की वृद्धि दर -23.3%, निर्माण कार्य की विकास दर -50%, व्यापार व होटल उद्योग की विकास दर -47% में गिरावट आई। आर्थिक व्यवसाय की वृद्धि दर में गिरावट होने के कारण करोड़ों लोगों के सामने रोजी–रोटी का प्रश्न खड़ा हो गया। इस दौरान करोड़ों लोग बेरोजगार हो गए, औद्योगिक शहरों से गांवों की ओर पलायन तेजी से बढ़ा। ऐसे लोगों के सामने रोजगार, आय, भोजन की कमी व भविष्य की अनिश्चितता का संकट उठ खड़ा हो गया। इस शोध पत्र में कोरोना महामारी का भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले दीर्धकालीन प्रभाव का अध्ययन किया गया है, व इसका विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

1. विश्व के सकल घरेलू उत्पाद में भारत का योगदान

भारत विश्व की पांच बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक रहा है। मार्च 2020 में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष के अनुमान के आधार पर भारत की अर्थव्यवस्था 2.83 ट्रिलियन डालर की है, व इसका विश्व की सकल घरेलू उत्पाद में योगदान 3.27% रहा है। 2020 में विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के सकल घरेलू उत्पाद व उनका विश्व की अर्थव्यवस्था में योगदान निम्न सारणी के द्वारा स्पष्ट किया गया है।

सारणी क्र. 1

विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के सकल घरेलू उत्पाद की स्थिति (मार्च 2020)

क्र.	देश	सकल घरेलू उत्पाद (ट्रिलियन डॉलर में)	विश्व की अर्थव्यवस्था में योगदान	विश्व में स्थान
1.	अमरीका	21.92	24.41	I
2.	चीन	16.43	16.49	II
3.	जापान	5.1	5.75	III
4.	जर्मनी	4.32	4.4	IV
5.	ब्रिटेन	2.86	2.65	V
6.	भारत	2.83	3.27	VI

स्त्रोत : अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, सूची 2021 ।

चित्र क्र.–1.1
विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के सकल घरेलू उत्पाद की स्थिति (मार्च 2020)

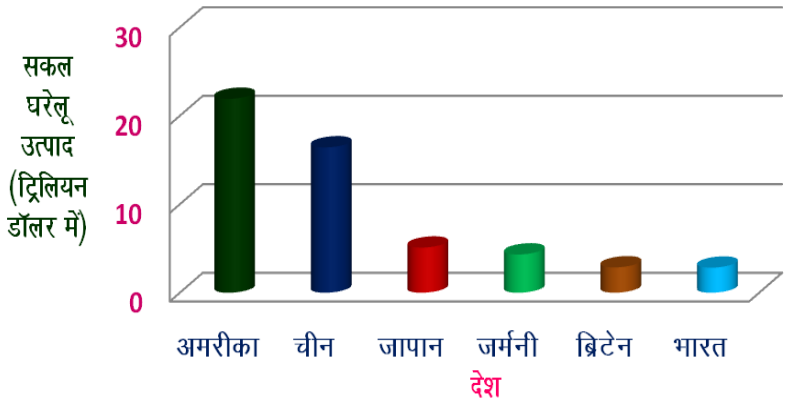

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

चित्र 1.2 – विश्व की अर्थव्यवस्था में योगदान

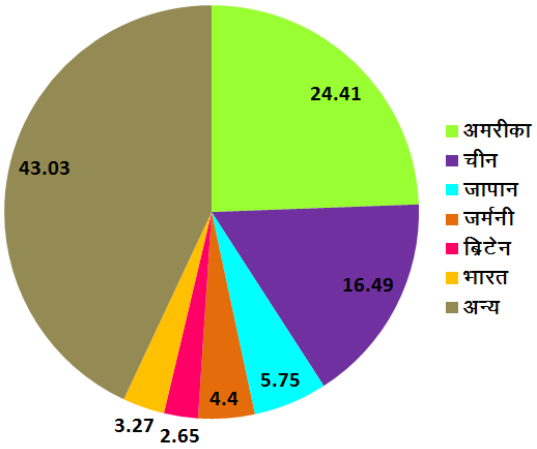

उपर्युक्त सारणी क्रमांक–1.1 एवं 1.2 से विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के सकल घरेलू उत्पाद व विश्व की अर्थव्यवस्था में उनके योगदान को दर्शाया गया है। अमरीका का इस क्रम में प्रथम स्थान है व विश्व की अर्थव्यवस्था में योगदान 24.41% है। द्वितीय स्थान पर चीन है, इसका विश्व की अर्थव्यवस्था में योगदान 16.43% है। तीसरे स्थान पर जापान है, जिसकी सकल घरेलू उत्पाद चीन से लगभग तीन गुना कम है, विश्व की अर्थव्यवस्था में इसका योगदान 5.75% है। इसके पश्चात जर्मनी फिर ब्रिटेन व भारत का स्थान आता है।

2. विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के आर्थिक वृद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

किसी देश के विकास को मापने का एक संकेतक आर्थिक विकास दर है। ऊंची आर्थिक वृद्धि वाला देश अधिक आर्थिक विकास को दर्शाता है। इस शोध पत्र में विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के आर्थिक विकास दर का (2015 से 2025) तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष द्वारा वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर का विवरण निम्नानुसार है –

सारणी क्र. 2

विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की वास्तविक विकास दर

वर्ष	अमरीका	चीन	जापान	जर्मनी	भारत	यूनाइटेड किंग्डम	विश्व
2015	3.1	6.9	1.2	1.5	8	2.4	3.4
2016	1.7	6.8	0.5	2.2	8.3	1.9	3.3
2017	2.3	6.9	2.2	2.6	7	1.9	3.8
2018	3	6.7	0.3	1.3	6.1	1.3	3.5
2019	2.2	6.1	0.7	0.6	4.2	1.5	2.8
2020	-4.3	1.9	-5.3	-6	-10.3	-9.8	-4.4
2021	3.1	8.2	2.3	4.2	8.8	5.9	5.2
2022	2.9	5.8	1.7	3.1	8	3.2	4.2
2023	2.3	5.7	1.2	1.8	7.6	1.9	3.8
2024	1.9	5.6	1	1.3	7.4	1.7	3.6
2025	1.8	5.5	0.6	1.2	7.2	1.6	3.5

स्त्रोत : अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

चित्र क्र. – 2
विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की वास्तविक विकास दर

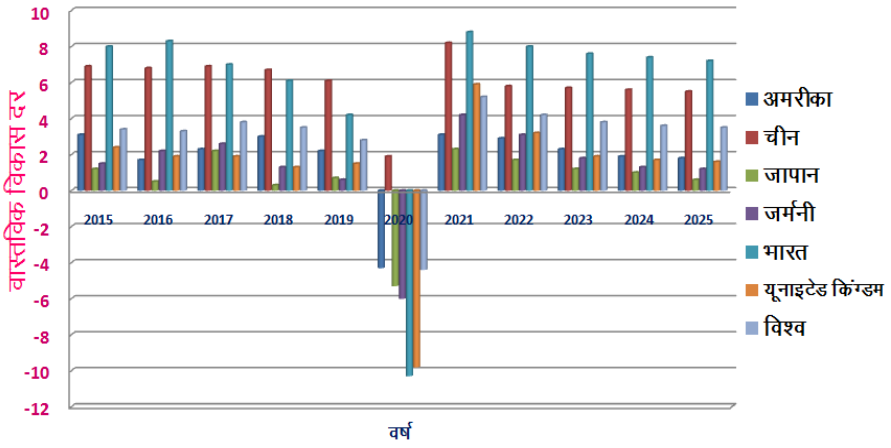

उपर्युक्त सारणी क्रमांक–2 में 2015 से 2025 तक विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के वास्तविक विकास दर के आंकड़े अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष द्वारा दिए गए हैं। सभी देशों की वास्तविक विकास दर 2015 से 2020 तक दिखाई गई है और 2020 से 2025 तक संभावित विकास दर का पूर्वानुमान किया गया है। 2020 में सभी देशों की विकास दर चीन को छोड़कर ऋणात्मक रही है। भारत की विकास दर कोरोनाकाल में सर्वाधिक प्रभावित हुई और विकास दर -10.3% हो गई, इसके पश्चात यूनाईटेड किंग्डम के विकास दर में -9.8% की कमी हुई। इन अर्थव्यवस्थाओं में चीन ही एक ऐसा देश रहा, जिसकी विकास दर ऋणात्मक नहीं हुई, जबकि पूरे विश्व की विकास दर में औसत रूप से -4.4% की कमी हुई। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष के पूर्वानुमान के अनुसार 2021 से 2025 तक सर्वाधिक विकास दर भारत की अनुमानित की गई है जो विश्व की औसत विकास दर से दुगुने से भी अधिक रहने की सम्भावना जताई गई है। इसके पश्चात चीन की विकास दर ऊंची रहने की संभावना बताई गई है। अमरीका की विकास दर के लगातार कम होने की संभावना व्यक्त की गई है, व न्यूनतम विकास दर जापान के रहने की संभावना बताई गई है। जबकि विश्व की औसत विकास दर में लगातार कमी आने की संभावना व्यक्त की गई है।

3. विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्था में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पादन का तुलनात्मक अध्ययन

प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद से उस देश के व्यक्तियों के जीवन स्तर का पता चलता है। इस शोध पत्र में विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसका विवरण निम्न सारणी से स्पष्ट है :–

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सारणी क्र. 3

प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का तुलनात्मक अध्ययन (मार्च 2020)

क्र.	देश	प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद	विश्व में स्थान (6 बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में स्थान)
1.	अमरीका	59,939	I
2.	चीन	8,612	V
3.	जापान	38,214	IV
4.	जर्मनी	44,680	II
5.	भारत	1,980	VI
6.	ब्रिटेन	39,532	III

स्त्रोत : अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, मार्च 2020 ।

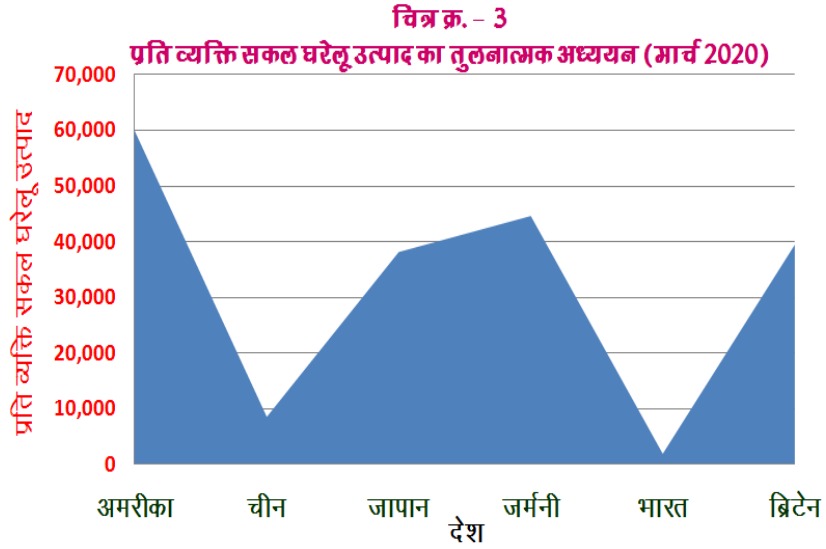

उपर्युक्त सारणी क्रमांक–3 से विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद की स्थिति स्पष्ट है। प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद की दृष्टि से अमरीका प्रथम स्थान पर है, यहाँ 59,939 डॉलर प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद है। द्वितीय स्थान पर जर्मनी, जिसकी प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 44,680 डॉलर है। तीसरे स्थान पर ब्रिटेन है, जिसकी प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 39,532 डॉलर है, चतुर्थ स्थान पर जापान है, जिसकी प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 38,214 डॉलर है, पांचवे स्थान पर प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 8,612 डॉलर के साथ चीन है, व छठे स्थान पर 1980 डॉलर प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के साथ भारत है। भारत भले ही छः बड़ी अर्थव्यवथाओं में आता है लेकिन प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पादन की दृष्टि से भारत की स्थिति अत्यंत दयनीय है। अमरीका की तुलना में भारत की प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पादन 30 गुना से भी कम है। जर्मनी की तुलना में लगभग 23 गुना, जापान की तुलना में लगभग 20 गुना कम है। चीन की तुलना में भारत की प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद 4 गुना से भी कम है। इस सारणी से भारत की

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

दयनीय स्थिति का पता चलता है। यहाँ के लोगों का जीवन स्तर निम्न होने का ज्ञान इस सारणी से होता है।

- **कोरोना का भारत के सकल घरेलू उत्पाद पर प्रभाव**

भारत की अर्थव्यवस्था पर कोरोना महामारी का विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से सर्वाधिक कुप्रभाव पड़ा है। मार्च 2020 के पश्चात् लगातार लॉकडाउन के कारण अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष के अनुसार 2020 में भारत की अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर -10.3% रही। एक वर्ष की विकास दर के ऋणात्मक होने से भारत की अर्थव्यवस्था पर क्या दूरगामी प्रभाव पड़ेगें। इसका विश्लेषण निम्न सारणी द्वारा किया गया है :–

सारणी क्र. 4

कोरोना काल का भारत की सकल घरेलू उत्पाद (चालू कीमत पर) पर दीर्धकालीन प्रभाव

वर्ष	सकल घरेलू उत्पाद चालू मूल्य पर (अमेरिकी बिलियन डॉलर)	GDP में वार्षिक परिवर्तन	वृद्धि दर	विश्लेषित सकल घरेलू उत्पाद	विश्लेषित सकल घरेलू उत्पाद – सकल घरेलू उत्पाद
2015	2103.588	-	7.00	-	-
2016	2294.118	190.53	8.30	-	-
2017	2652.755	358.64	8.00	-	-
2018	2713.165	60.41	6.10	-	-
2019	2868.93	155.77	4.20	-	-
2020	2592.583	-276.35	-10.30	3061.72	469.137
2021	2833.874	241.29	8.80	3331.09	497.216
2022	3094.177	260.30	8.00	3597.58	503.403
2023	3368.899	274.72	7.60	3870.996	502.097
2024	3657.454	288.56	7.40	4157.449	499.995
2025	3958.812	301.36	7.20	4456.785	497.973

स्त्रोत : अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष।

चित्र क्र. – 4

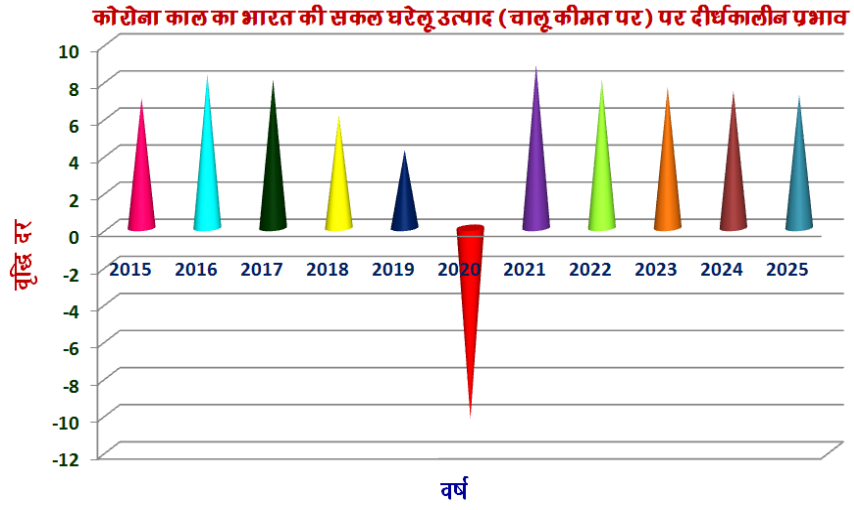

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

उपर्युक्त सारणी क्रमांक–4 में कोरोना महामारी का भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले दूरगामी प्रभाव का अध्ययन करने के लिये पाँच वर्षों की विकास दर (2015 से 2019) का औसत निकाला गया है,जो 6.72% है। इस विकास दर से 2020 की सकल घरेलू उत्पाद की गणना की गई है। इसके पश्चात 2021 से लेकर 2025 तक अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा संभावित विकास दर से सकल घरेलू की गणना की गई है। इसके पश्चात सकल घरेलू उत्पाद में 2019 के पश्चात प्रतिवर्ष सकल घरेलू उत्पाद में संभावित परिवर्तन दिखाया गया है। 2020 से 2025 तक हुए सकल घरेलू उत्पाद में संभावित परिवर्तन का औसत निकाला गया है, जो 273.25 अमरीकी बिलियन डॉलर है। 2025 के सकल घरेलू उत्पाद व विश्लेषित सकल घरेलू उत्पाद का अंतर निकाला गया है। यह अंतर 497.973 अमरीकी बिलियन डॉलर का है, जो औसत सकल घरेलू उत्पाद का 182% है। यह अंतर इस बात को दर्शाता है कि, भारतीय अर्थव्यवस्था को इस महामारी ने लगभग पौने दो वर्ष से भी पीछे कर दिया है। चालू कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 2020 में -10.3% कम होने का प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था पर दूरगामी हुआ है। एक वर्ष की वृद्धि दर ऋणात्मक होने से देश लगभग पौने दो वर्ष विकास में पीछे की ओर चला गया है।

भारत की मुद्रा स्फीति दर – भारत में मुद्रास्फीति दर में विभिन्न वर्षों में लगातार परिवर्तन होते रहे हैं जिसका मूल्य स्तर पर प्रभाव पड़ता है। निम्न सारणी द्वारा 2015 से 2025 तक भारत की मुद्रास्फीति दर को दिखाया गया है –

सारणी क्र. 5

भारत में मुद्रास्फीति दर

वर्ष	मुद्रास्फीति दर	परिवर्तन	2015 की तुलना में %परिवर्तन
2015	4.90	-	-
2016	4.50	-0.40	-9%
2017	3.60	-1.30	-27%
2018	3.43	-0.17	-30%
2019	4.76	+0.33	-3%
2020	4.95	+0.19	-1%
2021	3.75	-1.20	-29%
2022	3.83	+0.08	-22%
2023	3.87	+0.04	-23%
2024	3.94	+0.07	-20%
2025	4.04	+0.10	-18%

Source – Statista 2021

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

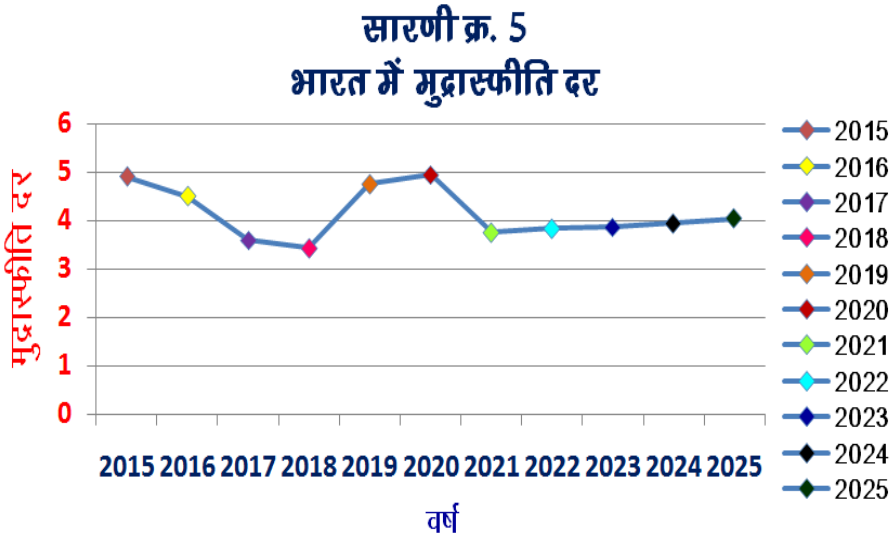

उपर्युक्त सारणी क्रमांक–5 से भारत की 2015 से 2025 तक संभावित मुद्रास्फीति की दर बताई गई है। 2015 से 2018 तक लगातार मुद्रास्फीति की दर में कमी हुई है इसके पश्चात 2019 व 2020 में मुद्रास्फीति की दर में कुछ वृद्धि हुई है, लेकिन 2021 में पुनः मुद्रास्फीति की दर में 1.2% कमी की संभावना बताई गई है। 2022 से 2025 तक संभावित मुद्रास्फीति की दर में थोड़ी वृद्धि दिखाई पड़ रही है। 2015 की तुलना में 2025 तक मुद्रास्फीति की दर में तुलनात्मक प्रतिशत ज्ञात किया गया है। 2017 में मुद्रास्फीति की दर में 27% की कमी, 2018 में 30% की कमी इसके पश्चात 2021 में मुद्रास्फीति की दर में 29%, 2022 में 22%, 2023 में 23%, 2024 में 20% व 2025 में 18% की कमी की संभावना बताई गई है।

भारत में बेरोजगारी की स्थिति

भारत में कोविड–19 के कारण लॉकडाउन अवधि में बेरोजगारी की दर में तेजी से वृद्धि हुई। अन्तर्राष्ट्रीय श्रमसंघ व एशियन विकास बैक के अनुसार 41 लाख युवा कोविड–19 के कारण अपने रोजगार खो चुके हैं। विभिन्न सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि, न केवल लोगों के जॉब खत्म हुए, बल्कि जिनके पास जॉब थी, उनकी सैलरी में 50% तक की कमी हो गई। 520 मिलिमयन रोजगार योग्य कार्यशक्ति में से लगभग 35.40% (200 मिलियन कार्यशक्ति) के पास वास्तव में कोई कार्य नहीं था यदि कार्य था भी तो उनकी आय में बहुत ज्यादा कमी कर दी गई। बेरोजगारी की दर में क्षेत्रीय विभिन्नता भी देखने को मिलती है। शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में बेरोजगारी दर ऊँची रही हे। निम्न सारणी से भारत में जनवरी से सितम्बर 2020 तक बेरोजगारी दर की स्थिति दर्शायी गई है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सारणी क्र. 6

बेरोजगारी की दर (जनवरी 2020 से सितम्बर 2020)

माह	बेरोजगारी दर	मासिक परिवर्तन	जनवरी की तुलना में परिवर्तन	जनवरी की तुलना में प्रतिशत परिवर्तन
जनवरी	7.22	-	-	-
फरवरी	7.76	0.54	0.54	7%
मार्च	8.75	0.99	1.53	21%
अप्रैल	23.52	14.77	16.30	325.76%
मई	21.73	-1.79	14.51	300.96%
जून	10.18	-11.55	2.96	40.9%
जुलाई	7.4	-2.78	0.18	2%
अगस्त	8.35	0.95	1.13	15%
सितम्बर	6.6	-1.75	-0.62	-9%

Source - Statista Research Department, Dec. 7, 2020

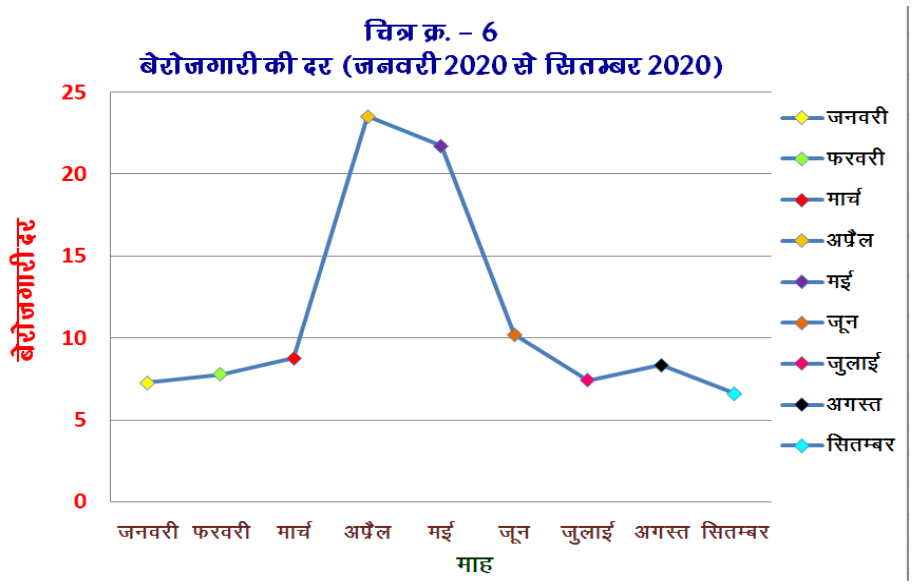

उपर्युक्त सारणी क्रमांक–6 द्वारा जनवरी से सितम्बर 2020 तक की अवधि में बेरोजगारी दर दिखाई गई है। अप्रैल में बेरोजगारी दर 23.52% सर्वाधिक रही इसके पश्चात् इसमें थोड़ी कमी आना शुरू हुई। जनवरी की तुलना में अप्रैल में बेरोजगारी की दर में 325.76% की वृद्धि, मई में 300.96% की वृद्धि, जून में 40.9% की वृद्धि अगस्त में 15% की वृद्धि, सितम्बर में बेरोजगारी की दर में -9% की कमी दिखाई गई है। इस सारणी से स्पष्ट होता है कि लॉकडाउन अवधि में बेरोजगारी की दर में सर्वाधिक वृद्धि हुई।

कोरोना से भारतीय विदेशी व्यापार भी बहुत ज्यादा प्रभावित हुआ। अप्रैल 2020 तक भारतीय निर्यातों में 60.28% की कमी आई, जो 10.36 अमेरिकी बिलियन डॉलर के बराबर रहा। आयात क्षेत्र में भी इस दौरान 58.65% की कमी आई, जो 17.12 बिलियन डॉलर के बराबर रहा ।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

व्यापार व उद्योग मंत्रालय के अनुसार व्यापार घाटा 6.76 बिलियन डॉलर का रहा, जो अप्रैल 2019 में 15.33 बिलियन डॉलर का था।

निष्कर्ष

भारत सकल घरेलू उत्पाद की दृष्टि से विश्व की छठी बड़ी अर्थव्यवस्था है। अमरीका विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, इसके पश्चात् द्वितीय स्थान पर चीन है, जिसकी सकल घरेलू उत्पाद अमेरीका से 5.42 ट्रिलियन डॉलर कम है। तृतीय स्थान पर जापान की अर्थव्यवस्था है जो चीन की अर्थव्यवस्था से 11.39 ट्रिलियन डॉलर कम है। चतुर्थ स्थान पर जर्मनी है, जिसकी सकल घरेलू उत्पाद जापान से 0.78 ट्रिलियन डॉलर कम है। पांचवे स्थान पर यूनाइटेड किंग्डम है, जिसकी सकल घरेलू उत्पाद जर्मनी से 1.46 ट्रिलियन डॉलर कम है। छठे स्थान पर भारत है, जिसकी सकल घरेलू उत्पाद यूनाइटेड किंग्डम से 0.02 ट्रिलियन डॉलर कम है। भारत की विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं से तुलना करने से स्पष्ट होता है कि, भारत भले ही विश्व की छठी बड़ी अर्थव्यवस्था हो, लेकिन अमरीका के सकल राष्ट्रीय उत्पाद से लगभग 10 गुना कम, व चीन के सकल राष्ट्रीय उत्पाद से 7 गुना कम है। भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर वाली अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य 2025 तक रखा गया था, उस लक्ष्य को पूरा करने में कोविड–19 ने कड़ी चुनौती सामने खड़ी कर दी है।

विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के आर्थिक वृद्धि के साथ भारत के आर्थिक वृद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि, 2020 में कोरोना महामारी के कारण भारत की आर्थिक वृद्धि दर को सर्वाधिक नुकसान पहुंचा। लगातार लॉकडाउन के कारण भारत की आर्थिक विकास दर में -10.3% की कमी हुई जो विश्व की औसत विकास दर -4.4% से बहुंत ज्यादा रही। 2015 से 2019 तक विश्व में चीन की आर्थिक विकास दर सर्वाधिक रही, लेकिन 2021 से 2025 तक संभावित विकास दर में भारत चीन को पीछे छोड़ते हुए विश्व में सर्वाधिक तीव्रगति से विकास करने वाला देश होने की संभावना व्यक्त की गई है, जो भारत के लिए एक शुभ संकेत है।

विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का तुलनात्मक अध्ययन करने से भारत की स्थिति सबसे निम्न प्रतीत होती है। भारत की प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद अमेरीका की तुलना में 30 गुना कम, जर्मनी की तुलना में 23 गुना कम, जापान की तुलना में 20 गुना कम व चीन की तुलना में 4 गुना से भी कम है। यह भारत के लिए चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि सकल राष्ट्रीय उत्पाद से भी ज्यादा महत्वपूर्ण प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद, जिससे जीवन स्तर, जीवन की गुणवत्ता का पता चलता है। इस दृष्टि से भारत विश्व की 6 बड़ी अर्थव्यवस्थाओं से बहुत पीछे है।

कोरोनाकाल में भारत के सकल घरेलू उत्पाद के दीर्धकालीन प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि, भारत की 2020 में विकास दर -10.3% रहने का

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

प्रभाव अर्थव्यवस्था पर दीर्घकालीन रूप से पड़ा है। एक वर्ष की विकास दर ऋणात्मक होने से देश लगभग पौने दो वर्ष विकास की दृष्टि से पीछे चला गया है। अर्थात् जो विकास 2025 में होना था, उसे प्राप्त करने में अब 1 वर्ष 9 माह अतिरिक्त समय लगेगा। इसका प्रभाव अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों पर पड़ेगा। औद्योगिक, निर्माण, पर्यटन व कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं रह पाएगा।

भारत की मुद्रास्फीति दर भी कोरोनाकाल से प्रभावित रही। 2019 में मुद्रा स्फीति की दर में -3% का परिवर्तन हुआ, 2020 में इसमें -1% का परिवर्तन और हुआ इसके पश्चात् 2021 से 2025 तक उसमें लगातार कमी परिलक्षित हो रही है। मुद्रास्फीति की दर में कमी होने से इसका विपरीत प्रभाव उत्पादन, रोजगार, मूल्य स्तर पर पड़ता है। थोड़ी सी मुद्रास्फीति देश के विकास के लिये आवश्यक होती है। इसमें कमी आने से विकास में भी कमी आने की संभावना बनी रहती है।

कोरोनाकाल में भारत की बेरोजगारी दर भी बहुत ज्यादा प्रभावित हुई। अप्रैल 2020 में बेरोजगारी की दर 23.52% व मई में 21.73% रही। इसका तात्पर्य हर चौथा कार्यशील व्यक्ति बेरोजगार हो गया। जून में यह दर कुछ कम हुई, इसके पश्चात् इसमें लगातार कमी आती दिखाई पड़ रही है। सितम्बर 2020 में यह 6.6% रहा। जो यह स्पष्ट करती है कि कोरोनाकाल में लॉकडाउन अवधि में जनवरी की तुलना में अप्रैल में 325.76% बेरोजगारी दर में वृद्वि हुई। 2020 में बेरोजगारी की दर में वृद्धि का दीर्घकालीन प्रभाव लोगों के जीवन स्तर व जीवन की गुणवत्ता पर पड़ना स्वाभाविक है।

भारत का सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र तेजी से विकास करता हुआ क्षेत्र है। यद्यपि कोरोनाकाल में यह क्षेत्र भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। लेकिन इसके विकास की वृहद संभावनाएं विद्यमान है।

सुझाव

कोरोनाकाल में भारत विश्व की छः बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में यद्यपि सर्वाधिक प्रभावित रहा, लेकिन इसके बावजूद इसके विकास की अनेक संभावनाऐं विद्यमान है, भारत की सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर विश्व में अगले पांच वर्षों में सर्वाधिक रहने की संभावना व्यक्त की जा रही है। हमें मानवीय पूंजी का विकास करना होगा। सूचना प्रौद्योगिक के क्षेत्र में भारत विश्व का सिरमौर है। अतः हमें इसके विकास के लिए उचित नीतियाँ बनाने व उनका क्रियान्वयन सही तरह से करना होगा। यद्यपि सरकार के द्वारा नई स्टार्टअपस के लिए कई योजनाएं बनाई गई हैं, लेकिन उन योजनाओं का क्रियान्वयन सही तरह से न होने के कारण उनका लाभ नए निवेशकों को नहीं मिल रहा है।

हमें चीन की तरह अपनी आधारभूत संरचना का विकास करना होगा जिससे विदेशी कंपनियाँ हमारे देश में आ सके। हमारे देश की नीतियाँ सहज व सरल होने से हम विदेशी पूँजी को आकर्षित कर सकेंगे। विदेशी निवेश आने से हमारे देश में रोजगार व राजस्व की वृद्धि होगी। रोजगार

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

वृद्धि होने से क्रयशक्ति बढ़ेगी, जिससे उत्पादन में वृद्धि होगी जिससे लोगों की आय में और वृद्धि होगी, जिससे लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि होगी व जीवन गुणवत्ता में सुधार आएगा।

कृषि क्षेत्र में भी औद्योगिकीकरण करने की आवश्यकता है। हमें कृषि क्षेत्र में भी विदेशी पूंजी को आमंत्रित करना चाहिए इससे न केवल कृषि क्षेत्र की उत्पादकता बढ़ेगी, बल्कि अच्छी तकनीकी भी कृषि क्षेत्र में आएगी। इसके साथ ही कृषि, उद्योग व सेवा क्षेत्र में समन्वय किए जाने की आवश्यकता है। यह कहा जाता है कि, 21वी शताब्दी एशिया के दो प्रमुख देश – चीन व भारत की है। हमारा देश विश्व का सबसे युवा देश है, यदि सरकार मानवीय संसाधन में निवेश करती है तो आने वाले वर्ष भारत के लिए एक नई संभावना लेकर आएगें, और निश्चित ही भारत विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकेगा

संदर्भ ग्रन्थ सूची

भारतीय अर्थव्यवस्था मिश्र व पुरी

भारतीय अर्थव्यवस्था दत्त व सुन्दरम

http://www.eepcindia.org

http://economictimes.indiatimes.com

http://www.imf.org.IND

http://enwikipedia.org

http://www.statista.com

Statista Research Department Dec. 7, 2020

http://www.rbi.org.in

http://www.worldbank.org

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language